अनुवाद

सात महर्षि, चार उनसे भी पूर्व में होने वाले सनकादि और चौदह मनु—ये सब मेरे मन से उत्पन्न हुए हैं और मेरे ही चिन्तन के परायण हैं, जिनकी संसार में यह सम्पूर्ण प्रजा है।।६।।

तात्पर्य

श्रीभगवान् संसार की प्रजा का आनुवंशिक वर्णन कर रहे हैं। ब्रह्मा उन परमेश्वर की हिरण्यगर्भ नामक शक्ति से जन्मे प्रथम जीव हैं। यथासमय ब्रह्मा से सात महर्षि, चार उनसे भी पूर्व के सनक, सनन्दन, सनातन और सनत्कुमार नामक महर्षि, और मनु प्रकट होते हैं। यही पच्चीस महर्षि ब्रह्माण्डवर्ती सम्पूर्ण प्राणियों के प्रजापति हैं। ब्रह्माण्ड असंख्य हैं और प्रत्येक ब्रह्माण्ड में असंख्य लोक हैं। प्रत्येक लोक विविध योनियों के प्राणियों से परिपूर्ण है। इन सब का जन्म पच्चीस प्रजापतियों से होता है। ब्रह्मा को एक हजार दिव्य वर्षों तक तपस्या करने के बाद श्रीकृष्ण की कृपा से सृष्टि करने की विधि का ज्ञान हुआ था। फिर उनसे सनक, सनन्दन, सनातन और सनत्कुमार, रुद्र और सात महर्षि आदि उत्पन्न हुये। इस प्रकार श्रीभगवान् की शक्ति ही ब्राह्मणों और क्षत्रियों आदि की उत्पत्ति का कारण है। इसीलिए ग्यारहवें अध्याय (११.३९) में ब्रह्मा को पितामह और श्रीकृष्ण को **प्रपितामह** कहा है।

एतां विभूतिं योगं च मम यो वेत्ति तत्त्वतः।
सोऽविकल्पेन योगेन युज्यते नात्र संशयः।।७।।

एताम्=इस सम्पूर्ण; **विभूतिम्**=ऐश्वर्य; **योगम् च**=योग शक्ति को भी; **मम**=मेरी; **यः**=जो; **वेत्ति**=जानता है; **तत्त्वतः**=तत्त्व से; **सः**=वह; **अविकल्पेन**= अनन्य; **योगेन**=भक्तियोग से; **युज्यते**=युक्त हो जाता है; **न**=नहीं है; **अत्र**=इस में; **संशयः**=शंका।

अनुवाद

जो मेरे इस ऐश्वर्य और योगशक्ति को तत्त्व से जानता है, वह निस्सन्देह मेरी अनन्य भक्ति के परायण हो जाता है।।७।।

तात्पर्य

श्रीभगवान् का तत्त्वज्ञान अध्यात्म-सिद्धि का परम शिखर है। जब तक श्रीभगवान् के अद्भुत ऐश्वर्यों में मनुष्य का दृढ़ विश्वास नहीं हो जाता, तब तक वह भक्ति के परायण नहीं हो सकता। लोग प्रायः यह तो जानते हैं कि श्रीभगवान् महान् हैं, पर उनकी महिमा के तत्त्व को व्यापक रूप से वे नहीं जानते। अतएव इस अध्याय में श्रीभगवान् की महिमा का विस्तृत विवरण किया जाता है। जिसे श्रीभगवान् की असमोर्ध्व महिमा का तत्त्वबोध हो जाता है, वह उनके शरणागत होकर भक्ति अवश्य करने लगता है। श्रीभगवान् के ऐश्वर्यों का तत्त्वज्ञानी उनकी शरण में गए बिना नहीं रह सकता। श्रीमद्भागवत, भगवद्गीता आदि शास्त्रों से यह तत्त्व जाना जा सकता है।